International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 30-10-2020; Accepted: 15-11-2020; Published: 27-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 109-110

त्रिलोचन के काव्य में मुक्ति का राग

कमलेन्द्र कुमार सतनामी
Post Researcher, Department of Hindi, Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, Madhya Pradesh, India

सारांश
त्रलोचन घटनाओ के कवि नही हैं वे मूल्यो के कवि हैं। उनकी कविता, हमारे विराट सामाजिक जीवन की बाहुल विविधताओं से युक्त है उन्होने अपनी कविताओं में मानवीय अनुभवो और जीवन–दशाओं की अभिव्यक्ति करते हुए, संघर्ष, आस्था, विविधता, प्रेम, न्याय और स्वतत्रंता जैसे जीवन मूल्यो को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है।

मूल शब्द: सक्षम, समता, कायम, अनुरागी, सच्चा

प्रस्तावना

त्रिलोचन सामाजिकता के कवि है। इसलिए उनकी कविता हमेशा साधारण मनुष्यों के आसपास ही रही है। समाज की पतित अवस्था के प्रति त्रिलोचन ने असंतोष प्रकट किया है। वर्तमान समाज की व्यावस्था विसंगति पूर्ण है। आज सामाजिक जीवन में अच्छाई और ईमानदारी का मूल्य गिर गया है। झूठ ने हमारे समाज के ऊपर ऐसा आवरण डाल दिया है कि, किसी को सच्चाई का पता नही चल रहा है। वर्तमान जीवन दिखवटीपन का एक खुला रंगमंच सा हो गया है। समाज की अवनति का विस्तार इस ढंग से हो गया है कि स्वार्थ और धनलोभ में मनुष्य के अन्दर से मनुष्यता ही समाप्त होती जा रही है। समाज के धनी लोग हमेशा से गरीबो का शोषण करते आए है। अमीरी और गरीबी के बीच का फासला बढता ही रहा है। हमारे समाज में इन दो तबको के बीच दूरी कम' नही हई है।

त्रिलोचन वर्तमान समय में फैली इस विसंगति के विरोधी हैं। यह विरोध लघु मानव की मुक्ति के लिए है। वे लगातार इस समाज में संघर्ष की प्रेरणा देते आए हैं। क्योकि वे जानते हैं कि बिना संघर्ष के यह समाज विकास नही कर सकता। इसलिए सर्वप्रथम वे समाज में समता कायम करने पर बल देते हैं। जिससे सभी जन को समान रूप से अधिकार प्राप्त हो सके।

त्रिलोचन की कविता में न तो झूठी आशा है और नही व्यर्थ की भावुकता अपितु उनमें समाज के पीडित लोगों के प्रति सच्चा प्रेम है जो उन्हे इस धरती का अनुरागी सिद्ध करता है।

'' मुझमें जीवन की लय जागी
मै धरती का हुँ अनुरागी
जडी भूत करती थी मुझको
वह सम्पूर्ण निराशा त्यागी'' ..... [1].

'सर्वे भवन्तु सुखनिः सर्वे सन्तु निरामया' भारतीय संस्कृति की पहचान रही है। त्रिलोचन की लोककल्याण की भावना उदात्त है। जिस प्रकार वायु कभी भी किसी प्रकार का भेदभाव किए बिना सभी को प्राणवान बनाए रखती है। उसके लिए जाति, लिंग, देश काल आदि मिथ्या है वह सर्वकल्याणकारी है वह जननी–सी स्नेहमयी है उसके लिए पूरा विश्व समान है, कवि त्रिलोचन भी वायु के माध्यम से यही बताना चाहते है कि दुनिया के सभी लोगों के मन में यही भावना घर कर जाए और तमाम बाधाओं एवं बंधनों से यह संसार मुक्त हो जाए।

''केवल भारत ही नही विश्व का मानव जागे
फूले–फले बढे अपने मन का सुख पाये
आपस का भय हटे, एक दूसरे से मिले
घृणा दूर हो, हृदय हृदय के ताल पर मिले'' [2].

त्रिलोचन ने रोजी रोटी के लिए दर–दर की खाक छानी है। शायद इन्ही अनुभवों ने उन्हे विभिन्न वाद विवादों से दूर रखा। वे मनुष्य के उज्ज्वल विकास के लिए कटिबद्ध रहे। त्रिलोचन अर्थात शंकर भगवान जिस प्रकार से शिव ने समुद्र मंथन से निकला विष पीकर सारे संसार को बचा लिया था उसी प्रकार कवि त्रिलोचन सामान्य जन के दुःख दर्द को अपने में समेट लेना चाहते हैं। वे इस संसार से दुःख, ईर्ष्या, द्वेष की गठरी को किसी समुद्र में फेक देना चाहते हैं। जिससे यह संसार दुःखो से मुक्त हो जाए।

आँसू बाँधे मैनें गठरिया में
अपने भी है पराए भी हैं
उपराए हैं तो तराए भी हैं ये
आप आ गए बराए भी हैं ये
साधे हैं मैने कन कन डगरिया में... [3].

प्रगतिवाद के कुछ कवियों ने गरीबों और शोषितों के लिए काफी शोर शराबा किया 'स्वर्ग लूटने ' तक की चुनौती भी दी पर यह नारेबाजी विशेष कारगर साबित नही हुई। आम आदमी के लिए भूख और आवास की समस्या शब्दो की चकाचौंध से हल नही हो सकती है। इसलिए त्रिलोचन संयमित स्वर से कहते है ' कोई भूखा हो तो उसको लाकर रोटी दो मत लंबी चौडी बात बनाओं'

त्रिलोचन सर्वहारा वर्ग की दयनीय स्थिति से पूर्णतः परिचित हैं। वे जानते है कि आर्थिक अव्यवस्थाओं के कारण मनुष्य का महत्व ही नही रहा। सर्वहारा वर्ग का स्थान उतना भी नही है, जितना सिंधु में बिन्दु' का होता है। पूंजीवाद के कारण सिर्फ आर्थिक स्थिति ही डाबाडोल नही होती अपितु मानवीय मूल्यो का भी ह्रास होता है।

कवि त्रिलोचन पूँजीवाद के प्रति आक्रोश प्रकट करते है।

पूँजीवाद ने नष्ट कर दिया सबका
जीवन का, जन का, समाज का, कला का,
बिना पूँजीवाद को मिटाये किसी
तरह भी यह जीवन स्वस्थ नही हो सकता है.. [4].

त्रिलोचन की कविता में जीवन का राग है, जीवन के प्रति आस्था है। इसलिए जीवन संघर्ष में कवि मानवता के जय के प्रति आश्वस्त है। जिनकी साँसों ने आस्था का स्वर गाया है आज नही तो कल जय होगी। जीवन में सुख–दुख एवं उतार –चढाव आते–जाते रहते है सतत् आगे बढने की ललक मनुष्य में होनी चाहिए। त्रिलोचन आमजन को इसी की प्रेरणा देते हैं तथा निरंतर आगे बढने के लिए प्रेरित करते हैं।

पथ कहां था सामने तम था
पद चले किस ओर दिग्भ्रम था
भय प्रबल था मन अचल था
चाह थी गति की उसे पथ पर लगाया है... [5].

त्रिलोचन की मार्क्सवादी विचारधारा परिवर्तन में विश्वास करती है। जिसके मूल में ही परिवर्तन द्वारा नए समय की संकल्पना की गयी है। सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन द्वारा ही साहित्य को नई ऊर्जा प्राप्त होती है, जिसके द्वारा रचनाकार मानव जीवन को सुसंस्कृत बनाकर प्रगति के पथ पर आग्रसर होता है त्रिलोचन का कवि परिवर्तन की विकासगामी प्रक्रिया में विश्वास करता है। जीवन में साकारात्मक बदलाव लाने के लिए वह इसकी अनिवार्यता पर बल देता है।

हम तुम इसी जगत के प्राणी
इसी जगत ने दी है वाणी
इसको नवनिर्मित करने में
हो हम तुम सक्रिय कल्याणी... [6].

त्रिलोचन अभाव भरे दलितों के मरूस्थल जीवन में अपने प्रेम करूणा से आशा का संचार करते है। त्रिलोचन को पूरा विश्वास है कि सभी शोषित ताकते एकत्र हो जाए तो संभव है कि हमारे देश से लाचारी, हीनता, पूरी तरह से दूर हो जाऐगी।

बीज क्रान्ति के बोता हूं मै,
अक्षर दाने है, घर बाहर जन समाया को नऐ सिरे से,
रच देने की रूचि देता हूं, धिरे–धिरे से
रहना असम्मान है जीवन का अनजाने
अगर घुटन हो, प्राण छटपताएं तो घेरा
तोड–फोड दो, क्योकि हुआ है नया सवेरा... [7].

निष्कर्ष

त्रिलोचन चिन्तन प्रधान कवि हैं इसलिए उनके काव्य में विचारों की श्रृंखला का अपना अलग महत्व है। वे जीवन के कवि हैं इसलिए उनकी कविताओं में जीवन के स्वस्थ एवं सबल रूप पर विशेष बल दिया गया है। उनमें सर्वोदय की भावना प्रधान है, वे दलितो, मजदूरो और श्रमजीवियों के पक्षधर है। कालमार्क्स के साम्यवादी जीवन दर्शन पर उनकी अटूट आस्था है। इसलिए वे पूँजीपतियों के विरूद्ध है। धार्मिक रूढियों और जडताओं से भी उनका विरोध है वे अन्यायी, अत्याचारी और जनशीर्ष के प्रति बडा कठोर रूख आपनाते है। इस प्रकार स्वस्थ लोकचिंतन उनके काव्य का आधार बन गया है। उनकी वैयक्तिक कविताओं में भी लोक जीवन की अमिट छाप है। वे समाज के लिए व्यक्ति के अस्तित्व को स्वीकारते हैं। मुख्य रूप से यही उनके विचार हैं जो यत्र–तत्र उनके काव्य संग्रहों में व्यक्त किये गए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. धरती त्रिलोचन शास्त्री पृष्ठ क्र0 1
2. दिगंत, त्रिलोचन पृष्ठ –54
3. सबका अपना आकाश, त्रिलोचन पृष्ठ. 33
4. धरती त्रिलोचन पृष्ठ –98
5. सबका अपना आकाश त्रिलोचन पृष्ठ– 44
6. धरती त्रिलोचन पृष्ठ –12
7. अनकहनी भी कुछ कहनी, त्रिलोचन शास्त्री पृष्ठ. 87